

هَلْ تَحْسِبُهُمْ مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكَاظًا ۙ (۱۵۸)

क्या तुम उन में किसी को देखते हो या उन की भिनक सुनते हो¹⁵⁸

﴿ ۱۳۵ ایاتھا ﴾ ﴿ ۲۰ سُورَةُ طه مَكِّيَّةٌ ۲۵ ﴾ ﴿ ۸ رُكُوعَاتُهَا ﴾

सूरए ताहा मक्किय्या है, इस में एक सो पैंतीस आयतें और आठ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللّٰهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

طه ۱ مَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَى ۙ إِلَّا تَذَكَّرًا ۚ لَّيِّنَ

ऐ महबूब हम ने तुम पर येह कुरआन इस लिये न उतारा कि तुम मशक्कत में पड़ो² हां उस को नसीहत जो

يَخْشَى ۙ تَنْزِيلًا مِّنْ مَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَوَاتِ الْعُلَى ۙ الرَّحْمَنِ

डर रखता हो³ उस का उतारा हुवा जिस ने ज़मीन और ऊंचे आस्मान बनाए वोह बड़ी मेहर (रहमत) वाला

عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۙ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا

उस ने अर्श पर इस्तिवा फरमाया जैसा उस की शान के लाइक है उस का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और जो कुछ

بَيْنَهُمَا وَمَاتَحْتَ الثَّرَى ۙ وَإِنْ تَجَهَّرَ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَ

इन के बीच में और जो कुछ इस गीली मिट्टी के नीचे है⁴ और अगर तू बात पुकार कर कहे तो वोह तो भेद को जानता है और

أَخْفَى ۙ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۙ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۙ وَهَلْ أُنْتَك

उसे जो उस से भी ज़ियादा छुपा है⁵ अल्लाह कि उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं उसी के हैं सब अच्छे नाम⁶ और कुछ तुम्हें

158 : वोह सब नेस्तो नाबूद (हलाक व बरबाद) कर दिये गए, इसी तरह येह लोग अगर वोही तरीका इख्तियार करेगे तो इन का भी वोही अन्जाम होगा। **1** : सूरए ताहा मक्किय्या है। इस में आठ रूकूअ, एक सो पैंतीस आयतें और एक हजार छ⁷ सो इक्तालीस कलिमे और पांच हजार दो सो बयालीस हुरूफ हैं। **2** : और तमाम शब के क़ियाम की तकलीफ उठाओ। शाने नुज़ूल : सय्यिदे आलम इब्दातत صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ इबादत में बहुत जुहद फरमाते थे और तमाम शब क़ियाम में गुजारते यहां तक कि क़दमे मुबारक वरम कर आते, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने हाज़िर हो कर ब हुक्मे इलाही अर्ज़ किया कि अपने नफ़से पाक को कुछ राहत दीजिये इस का भी हक है। एक कौल येह भी है कि सय्यिदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ लोगों के कुफ़्र और उन के ईमान से महरूम रहने पर बहुत ज़ियादा मुतअस्सिफ व मुतहस्सिर (अफ़सुदा) रहते थे और ख़ातिरे मुबारक पर इस सबब से रन्जो मलाल रहा करता था, इस आयत में फरमाया गया कि आप रन्जो मलाल की कोफ़्त न उठाएं, कुरआने पाक आप की मशक्कत के लिये नाज़िल नहीं किया गया है। **3** : वोह इस से नफ़अ उठाएगा और हिदायत पाएगा। **4** : जो सातों ज़मीनों के नीचे है। मुराद येह है कि काएनात में जो कुछ है अर्श व समावात, ज़मीन व तहतुस्सरा कुछ हो, कहीं हो सब का मालिक अल्लाह है। **5** : "سير" या 'नी भेद वोह है जिस को आदमी रखता और छुपाता है और इस से ज़ियादा पोशीदा वोह है जिस को इन्सान करने वाला है मगर अभी जानता भी नहीं न उस से उस का इरादा मुतअल्लिक हुवा न उस तक ख़याल पहुंचा। एक कौल येह है कि भेद से मुराद वोह है जिस को इन्सानों से छुपाता है और इस से ज़ियादा छुपी हुई चीज़ वस्वसा है। एक कौल येह है कि भेद बन्दे का वोह है जिसे बन्दा खुद जानता है और अल्लाह तआला जानता है, इस से ज़ियादा पोशीदा रब्बानी असरार हैं जिन को अल्लाह जानता है बन्दा नहीं जानता।

حَدِيثُ مُوسَى ٩ إِذْ رَأَى نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا ۚ

मूसा की खबर आई⁷ जब उस ने एक आग देखी तो अपनी बीबी से कहा ठहरो मुझे एक आग नजर पड़ी है

لَعَلِّي آتَيْتُكُمْ مِنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجْدٍ عَلَى النَّارِ هُدًى ١٠ فَلَمَّا آتَتْهَا

शायद मैं तुम्हारे लिये उस में से कोई चिगारी लाऊं या आग पर रास्ता पाऊं फिर जब आग के पास आया⁸

نُودِي يُمُوسَى ١١ إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاحْذَرْنِي يَا مُوسَى ١٢ إِنَّكَ بِالْوَادِ

निदा फरमाई गई कि ऐ मूसा बेशक मैं तेरा रब हूँ तो तू अपने जूते उतार डाल⁹ बेशक तू पाक

الْمُقَدَّسِ طُومَى ١٢ وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَى ١٣ إِنِّي أَنَا اللَّهُ

जंगल तुवा में है¹⁰ और मैं ने तुझे पसन्द किया¹¹ अब कान लगा कर सुन जो तुझे वही होती है बेशक मैं ही हूँ **अल्लाह**

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي ١٤ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ١٥ إِنَّ السَّاعَةَ

कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मेरी बन्दगी कर और मेरी याद के लिये नमाज काइम रख¹² बेशक कियामत आने

آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ١٥ فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا

वाली है करीब था कि मैं उसे सब से छुपाऊँ¹³ कि हर जान अपनी कोशिश का बदला पाए¹⁴ तो हरगिज तुझे¹⁵ इस के मानने से वोह

आयत में तम्बीह है कि आदमी को क़बाएह अफ़्हाल से परहेज करना चाहिये वोह ज़ाहिरा हों या बातिना क्यू कि **अल्लाह** तआला से कुछ छुपा नहीं और इस में नेक आ'माल पर तरगीब भी है कि ताअत ज़ाहिर हो या बातिन **अल्लाह** से छुपी नहीं वोह जज़ा अता फ़रमाएगा । तफ़्सीरे बैजावी में "कौल" से ज़िक्रे इलाही और दुआ मुराद ली है और फ़रमाया है कि इस आयत में इस पर तम्बीह की गई है कि ज़िक्रो दुआ में जहर (बुलन्द आवाज़ करना) **अल्लाह** तआला को सुनाने के लिये नहीं है बल्कि ज़िक्र को नफ़्स में रासिख़ करने और नफ़्स को ग़ैर के साथ मशग़ली से रोकने और बाज़ रखने के लिये है । 6 : वोह वाहिद बिज्ज़ात है और अस्मा व सिफ़ात इबारात हैं और ज़ाहिर है कि तअहुदे इबारात तअहुदे मा'ना को मुक्तज़ी नहीं । 7 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के अहवाल का बयान फ़रमाया गया ताकि मा'लूम हो कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام जो दरजे उल्ल्या पाते हैं वोह अदाए फ़राइजे नुबुव्वत व रिसालत में किस क़दर मशक्कतें बरदाश्त करते और कैसे कैसे शदाइद पर सब्र फ़रमाते हैं । यहां हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के उस सफ़र का वाकिआ बयान फ़रमाया जाता है जिस में आप मद्यन से मिस्र की तरफ़ हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام से इजाजत ले कर अपनी वालिदए माजिदा से मिलने के लिये रवाना हुए थे, आप के अहले बैत हमराह थे और आप ने बादशाहाने शाम के अन्देसे से सड़क छोड़ कर जंगल में क़तए मसाफ़त इख़्तियार फ़रमाई, बीबी साहिबा हामिला थीं चलते चलते तूर के गर्बी जानिब पहुंचे, यहां रात के वक़्त बीबी साहिबा को दर्द ज़ेह शुरूअ हुवा, ये रात अंधेरी थी, बर्फ़ पड़ रही थी, सर्दी शिदत की थी, आप को दूर से आग मा'लूम हुई 8 : यहां एक दरख़्त सर सब्जो शदाब देखा जो ऊपर से नीचे तक निहायत रोशन था, जितना उस के करीब जाते हैं दूर होता है, जब ठहर जाते हैं करीब होता है, उस वक़्त आप को 9 : कि इस में तवाजोअ और बुक़अए मुअज़्ज़मा का एहतिराम और वादिये मुक़द्स की खाक से हुसूले बरक़त का मौक़अ है । 10 : "तुवा" वादिये मुक़द्स का नाम है जहां येह वाकिआ पेश आया । 11 : तेरी कौम में से नुबुव्वत व रिसालत व शरफ़े कलाम के साथ मुशरफ़ फ़रमाया, येह निदा हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने हर जुच्चे बदन से सुनी और कुव्वते सामिआ ऐसी आम हुई कि तमाम जिस्मे अक़दस कान बन गया । 12 : ताकि तू उस में मुझे याद करे और मेरी याद में इख़लास और मेरी रिज़ा मक़सूद हो, कोई दूसरी गरज़ न हो, इसी तरह रिया का दख़ल न हो या येह मा'ना है कि तू मेरी नमाज़ काइम रख ताकि मैं तुझे अपनी रहमत से याद फ़रमाऊं । फ़ाएदा : इस से मा'लूम हुवा कि इमान के बा'द आ'ज़मे फ़राइज़ नमाज़ है । 13 : और बन्दों को उस के आने की ख़बर न दूं और उस के आने की ख़बर न दी जाती अगर इस ख़बर देने में येह हिक़मत न होती 14 : और उस के ख़ौफ़ से मआसी तर्क करे नेकियां ज़ियादा करे और हर वक़्त तौबा करता रहे । 15 : ऐ उम्मते मूसा ! ख़िताब व ज़ाहिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को है और मुराद इस से आप की उम्मत है । (मरक)

مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَتَرْدَى ۱۶ وَمَاتِكَ بِسَيِّئِكَ

बाजू न रखे जो इस पर ईमान नहीं लाता और अपनी ख्वाहिश के पीछे चला¹⁶ फिर तो हलाक हो जाए और येह तेरे दाहने हाथ में क्या है

يُوسَى ۱۷ قَالَ هِيَ عَصَايَ جِ اتَّوَكَّأُ عَلَيْهَا وَأُشُّ بِهَا عَلَى غَنِيٍّ وَ

ऐ मूसा¹⁷ अर्ज की येह मेरा असा है¹⁸ मैं इस पर तक्या (टेक व सहारा) लगाता हूं और इस से अपनी बकरियों पर पते झाड़ता हूं और

لِي فِيهَا مَا رِبُّ أُخْرَى ۱۸ قَالَ أَلْقَهَا يُّوسَى ۱۹ فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ

मेरे इस में और काम हैं¹⁹ फरमाया इसे डाल दे ऐ मूसा तो मूसा ने उसे डाल दिया तो जभी वोह दौड़ता हुवा

تَسْعَى ۲۰ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَعِيدٌ هَا سِيرَتَهَا الْأُولَى ۲۱ وَ

सांप हो गया²⁰ फरमाया इसे उठा ले और डर नहीं अब हम इसे फिर पहली तरह कर देंगे²¹ और

أَضْمُ يَدَكَ إِلَى جَنَاحِكَ تَخْرُجُ بَيِّضًا مِنْ غَيْرِ سَوْءٍ آيَةٌ أُخْرَى ۲۲

अपना हाथ अपने बाजू से मिला²² खूब सपेद निकलेगा बे किसी मरज के²³ एक और निशानी²⁴

لِنُرِيكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ۲۳ إِذْ هَبَّ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ۲۴ قَالَ

कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियां दिखाएं फिर औन के पास जा²⁵ उस ने सर उठाया²⁶ अर्ज की

رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۲۵ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۲۶ وَأَحْلِلْ عُقْدَةَ مِنِّي

ऐ मेरे रब मेरे लिये मेरा सीना खोल दे²⁷ और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज़बान की

16 : अगर तू उस का कहना माने और कियामत पर ईमान न लाए तो 17 : इस सुवाल की हिकमत येह है कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَامُ अपने असा को देख लें और येह बात कल्ब में खूब रासिख हो जाए कि येह असा है ताकि जिस वक्त वोह सांप की शकल में हो तो आप के खातिरे मुबारक पर कोई परेशानी न हो या येह हिकमत है कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَامُ को मानूस किया जाए ताकि हैबते मुकालमत (अब्बास तआला से हम कलामी करते हुए रो'ब व दहशत) का असर कम हो (मारक وغيره) 18 : इस असा में ऊपर की जानिब दो शाखें थीं और उस का नाम नब्आ था । 19 : मिस्ल तोशा और पानी उठाने और मूजी जानवरों को दफ़् करे और आ'दा से मुहारबा में काम लेने वगैरा के, इन फवाइद का जिक्र करना ब तरीके शुके नेअमे इलाहिय्यह था । अब्बास तआला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَامُ से 20 : और कुदरते इलाही दिखाई गई कि जो असा हाथ में रहता था और इतने कामों में आता था अब अचानक वोह ऐसा हैबतनाक अज़्दहा बन गया । येह हाल देख कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَامُ को खौफ़ हुवा तो अब्बास तआला ने उन से 21 : येह फरमाते ही खौफ़ जाता रहा हुता कि आप ने अपना दस्ते मुबारक उस के मुंह में डाल दिया और वोह आप के हाथ लगाते ही मिस्ले साबिक असा बन गया, अब उस के बा'द एक और मो'जिज़ा अता फरमाया जिस की निस्बत इशार्द फरमाया : 22 : या'नी कफे दस्ते रास्त (सीधे हाथ की हथेली) बाएं बाजू से बगल के नीचे मिला कर निकालिये तो आपताब की तरह चमक्ता निगाहों को खीरा करता (चुंधयाता हुवा) और 23 : हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फरमाया कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَامُ के दस्ते मुबारक से रात व दिन में आपताब की तरह नूर जाहिर होता था और येह मो'जिज़ा आप के आ'जम मो'जिज़ात में से है, जब आप दोबारा अपना दस्ते मुबारक बगल के नीचे रख कर बाजू से मिलाते तो वोह दस्ते अक़दस हालते साबिका पर आ जाता । 24 : आप के सिद्के नुबुव्वत की असा के बा'द इस निशानी को भी लीजिये । 25 : रसूल हो कर 26 : और कुफ़्र में हद से गुज़र गया और उलूहिय्यत का दा'वा करने लगा । 27 : और इसे तहम्मले रिसालत के लिये वसीअ फरमा दे ।

لِسَانِي ۲۷ يَفْقَهُوا قَوْلِي ۲۸ وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِّنْ أَهْلِي ۲۹ هُرُونَ

गिरह खोल दे²⁸ कि वोह मेरी बात समझें और मेरे लिये मेरे घर वालों में से एक वजीर कर दे²⁹ वोह कौन मेरा

أَخِي ۳۰ أَشَدُّ بِهِ أَزْرِي ۳۱ وَأَشْرِكُهُ فِي أَمْرِي ۳۲ كَيْ نُسَبِّحَكَ

भाई हारून उस से मेरी कमर मजबूत कर और उसे मेरे काम में शरीक कर³⁰ कि हम ब कसरत तेरी

كَثِيرًا ۳۳ وَنَذُرُكَ كَثِيرًا ۳۴ إِنَّكَ كُنْتَ بِنَابِصِيرًا ۳۵ قَالَ قَدْ أُوتِيَتْ

पाकी बोलें और ब कसरत तेरी याद करें³¹ बेशक तू हमें देख रहा है³² फरमाया ऐ मूसा तेरी मांग

سُؤْلَكَ يَٰمُوسَىٰ ۳۶ وَلَقَدْ مَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ۳۷ إِذْ أَوْحَيْنَا

तुझे अता हुई और बेशक हम ने³³ तुझ पर एक बार और एहसान फरमाया जब हम ने तेरी

إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ۳۸ أَنْ أَقْدِفِيهِ فِي التَّابُوتِ فَاقْدِفِيهِ فِي الْيَمِّ

मां को इल्हाम किया जो इल्हाम करना था³⁴ कि इस बच्चे को सन्दूक में रख कर दरिया में³⁵ डाल दे

فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُ ۳۹ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ

तो दरिया इसे किनारे पर डाले कि इसे वोह उठा ले जो मेरा दुश्मन और इस का दुश्मन³⁶ और मैं ने तुझ पर अपनी

مَحَبَّةً مِّنِّي ۴۰ وَتَصْنَعُ عَلَيَّ عَيْنِي ۴۱ إِذْ تَسْتَشِيءُ أَخْطَاكَ فَتَقُولُ هَلْ

तरफ की महबूत डाली³⁷ और इस लिये कि तू मेरी निगाह के सामने तय्यार हो³⁸ तेरी बहन चली³⁹ फिर कहा क्या

28 : जो खुर्द साली (बचपन) में आग का अंगारा मुंह में रख लेने से पड़ गई है और इस का वाकिआ येह था कि बचपन में आप एक रोज़ फिरऔन की गोद में थे आप ने उस की दाही पकड़ कर उस के मुंह पर जोर से तमांचा मारा, इस पर उसे गुस्सा आया और उस ने आप के कल्ल का इरादा किया। आसिया ने कहा कि ऐ बादशाह येह नादान बच्चा है क्या समझे ? तू चाहे तो तजरिबा कर ले ! इस तजरिबे के लिये एक तशत में आग और एक तशत में याकूत सुख आप के सामने पेश किये गए, आप ने याकूत लेना चाह मगर फिरिश्ते ने आप का हाथ अंगारे पर रख दिया और वोह अंगारा आप के मुंह में दे दिया, इस से ज़बाने मुबारक जल गई और लुकनत पैदा हो गई, इस के लिये आप ने येह दुआ की। 29 : जो मेरा मुआविन व मो'तमद हो। 30 : या'नी अम्ने नुबुव्वत व तब्लोगे रिसालत में। 31 : नमाजों में भी और खारिजे नमाज भी। 32 : हमारे अहवाल का आलिम है। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की इस दरख्वास्त पर **اَللّٰهُ** तआला ने 33 : इस से कब्ल 34 : दिल में डाल कर या ख्वाब के ज़रीए से, जब कि उन्हें आप की विलादत के वक़्त फिरऔन की तरफ से आप को कल्ल कर डालने का अन्देशा हुवा। 35 : या'नी नील में 36 : या'नी फिरऔन। चुनान्चे हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा ने एक सन्दूक बनाया और उस में रूई बिछाई और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को उस में रख कर सन्दूक बन्द कर दिया और उस की दरज़े (झिरयां) रोगने कीर (तारकोल) से बन्द कर दीं आप उस सन्दूक के अन्दर पानी में पहुंचे, फिर उस सन्दूक को दरियाए नील में बहा दिया, इस दरिया से एक बड़ी नहर निकल कर फिरऔन के महल में गुज़रती थी, फिरऔन मअ अपनी बीबी आसिया के नहर के किनारे बैठा था, नहर में सन्दूक आता देख कर उस ने गुलामों और कनीज़ों को उस के निकालने का हुक्म दिया। वोह सन्दूक निकाल कर सामने लाया गया, खोला तो उस में एक नुरानी शकल फ़रज़न्द जिस की पेशानी से वजाहत व इक़बाल के आसार नुमूदार थे नज़र आया, देखते ही फिरऔन के दिल में ऐसी महबूत पैदा हुई कि वोह वारफ़ता हो गया और अक्ल व ह्वास बजा न रहे, अपने इख़्तियार से बाहर हो गया, इस की निस्वत **اَللّٰهُ** तबारक व तआला फ़रमाता है : 37 : हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि **اَللّٰهُ** तआला ने उन्हें महबूब बनाया और ख़ल्क का महबूब कर दिया और जिस को **اَللّٰهُ** तबारक व तआला अपनी महबूबियत से नवाज़ता है कुलूब में उस की महबूत पैदा हो जाती है, जैसा कि हदीस शरीफ़ में वारिद हुवा, येही हाल हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का था जो आप को देखता था उसी के दिल में आप की महबूत पैदा हो जाती थी। क़तादा ने कहा कि हज़रते

أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَنْ يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۗ

مैं तुम्हें वोह लोग बता दू जो इस बच्चे की परवरिश करें⁴⁰ तो हम तुझे तेरी मां के पास फेर लाए कि उस की आंख⁴¹ ठन्डी हो और गम न करे⁴²

وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ

और तू ने एक जान को कत्ल किया⁴³ तो हम ने तुझे गम से नजात दी और तुझे खूब जांच लिया⁴⁴ तो तू कई बरस

فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ۖ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَا مُوسَىٰ ۙ وَأَصْطَنَعْتُكَ

मद्यन वालों में रहा⁴⁵ फिर तू एक ठहराए वा'दे पर हाजिर हुवा ऐ मूसा⁴⁶ और मैं ने तुझे खास

لِنَفْسِي ۚ إِذْ هَبُّ أَنْتَ وَأَخُوكَ بِآيَتِي وَلَا تَتَّبِعَانِي فِي ذِكْرِي ۚ إِذْ هَبَّ

अपने लिये बनाया⁴⁷ तू और तेरा भाई दोनों मेरी निशानियां⁴⁸ ले कर जाओ और मेरी याद में सुस्ती न करना दोनों

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۚ فَقَوْلَا لَهُ قَوْلًا لَّيْسَ لَعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ

फिरऔन के पास जाओ बेशक उस ने सर उठाया तो उस से नर्म बात कहना⁴⁹ इस उम्मीद पर कि वोह ध्यान करे या

يَخْشَىٰ ۚ قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَنْ يُفْرِطَ عَلَيْنَا أَوْ أَنْ يَطْغَىٰ ۚ

कुछ डरे⁵⁰ दोनों ने अर्ज किया ऐ हमारे रब बेशक हम डरते हैं कि वोह हम पर ज़ियादती करे या शरारत से पेश आए

या'नी 38 : या'नी मेरी हिफाजत व निगहबानी में परवरिश पाए। 39 : जिस का नाम मरयम था ताकि वोह आप के हाल का तजस्सुस करे और मा'लूम करे कि सन्दूक कहाँ पहुंचा ? आप किस के हाथ आए ? जब उस ने देखा कि सन्दूक फिरऔन के पास पहुंचा और वहाँ दूध पिलाने के लिये दाइयां हाजिर की गईं और आप ने किसी की छाती को मुंह न लगाया तो आप की बहन ने 40 : उन लोगों ने इस को मन्जूर किया, वोह अपनी वालिदा को ले गईं, आप ने उन का दूध कबूल फरमाया। 41 : आप के दीदार से 42 : या'नी गमे फिराक दूर हो। इस के बा'द हज़रते मूसा के एक और वाकिए का जिक्र फरमाया जाता है 43 : हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهما ने फरमाया कि हज़रते मूसा ने फिरऔन की कौम के एक काफिर को मारा था वोह मर गया, कहा गया है कि उस वक्त आप की उम्र शरीफ़ बारह साल की थी, इस वाकिए पर आप को फिरऔन की तरफ से अन्देशा हुआ। 44 : मेहनतों में डाल कर और उन से खलासी अता फरमा कर। 45 : मद्यन एक शहर है मिस्र से आठ मन्ज़िल फासिले पर, यहाँ हज़रते शुएब عليه الصلوة والسلام रहते थे, हज़रते मूसा عليه الصلوة والسلام मिस्र से मद्यन आए और कई बरस तक हज़रते शुएब عليه الصلوة والسلام के पास इकामत फरमाई और उन की साहिब जादी सफूरा के साथ आप का निकाह हुआ। 46 : या'नी अपनी उम्र के चालीसवें साल, और येह वोह सिन है कि अम्बिया की तरफ़ इस सिन में वह्य की जाती है। 47 : अपनी वह्य और रिसालत के लिये ताकि तू मेरे इरादे और मेरी महबबत पर तसरफ़ करे और मेरी हुज्जत पर काइम रहे और मेरे और मेरी खल्क के दरमियान खिताब पहुंचाने वाला हो। 48 : या'नी मो'जिजात 49 : या'नी उस को ब नरमी नसीहत फरमाना और नरमी का हुक्म इस लिये था कि उस ने बचपन में आप की खिदमत की थी और बा'ज मुफस्सरीन ने फरमाया कि नरमी से मुराद येह है कि आप उस से वा'दा करें कि अगर वोह ईमान कबूल करेगा तो तमाम उम्र जवान रहेगा कभी बुढ़ापा न आएगा और मरते दम तक उस की सल्तनत बाकी रहेगी और खाने पीने और निकाह की लज्जतें ता दमे मर्ग बाकी रहेंगी और बा'दे मौत दुखूले जन्नत मुयस्सर आएगा। जब हज़रते मूसा عليه الصلوة والسلام ने फिरऔन से येह वा'दे किये तो उस को येह बात बहुत पसन्द आई लेकिन वोह किसी काम पर बिगैर मशवरए हामान के कर्दई फ़ैसला नहीं करता था, हामान मौजूद न था जब वोह आया तो फिरऔन ने उस को येह खबर दी और कहा कि मैं चाहता हूँ कि हज़रते मूसा عليه الصلوة والسلام की हिदायत पर ईमान कबूल कर लूँ। हामान कहने लगा : मैं तो तुझ को आक़िल व दाना समझता था ! तू रब है, बन्दा बना चाहता है ! तू मा'बूद है, आबिद बनने की ख्वाहिश करता है ! फिरऔन ने कहा : तू ने ठीक कहा और हज़रते हारून عليه الصلوة والسلام मिस्र में थे, **اصحاب** तअलाला ने हज़रते मूसा عليه الصلوة والسلام को हुक्म किया कि वोह हज़रते हारून के पास आएँ और हज़रते हारून عليه الصلوة والسلام को वह्य की, कि हज़रते मूसा عليه الصلوة والسلام से मिलें। चुनान्चे वोह एक मन्ज़िल चल कर आप से मिले और जो वह्य उन्हें हुई थी उस की हज़रते मूसा عليه الصلوة والسلام को इत्तिलाअ दी। 50 : या'नी आप की ता'लीम व नसीहत इस उम्मीद के साथ होनी चाहिये ताकि आप के लिये अज़्र और उस पर इल्जामे हुज्जत और

قَالَ لَا تَخَافَا إِنِّي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَى ﴿۳۶﴾ فَأْتِيَهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا

फरमाया डरो नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ⁵¹ सुनता और देखता⁵² तो उस के पास जाओ और उस से कहो कि हम तेरे रब

رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا تَعَذِّبْهُمْ ۗ قَدْ جِئْنَاكَ

के भेजे हुए हैं तो औलादे या'कूब को हमारे साथ छोड़ दे⁵³ और उन्हें तक्लीफ न दे⁵⁴ बेशक हम तेरे पास

بَايَةٍ مِّن رَّبِّكَ ۗ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿۳۷﴾ إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا

तेरे रब की तरफ से निशानी लाए हैं⁵⁵ और सलामती उसे जो हिदायत की पैरवी करे⁵⁶ बेशक हमारी तरफ वह्य हुई है

أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿۳۸﴾ قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمْ يَا مُوسٰى ﴿۳۹﴾

कि अज़ाब उस पर है जो झुटलाए⁵⁷ और मुंह फेरे⁵⁸ बोला तो तुम दोनों का खुदा कौन है ऐ मूसा

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدٰى ﴿۵۰﴾ قَالَ فَمَا بَالُ

कहा हमारा रब वोह है जिस ने हर चीज को उस के लाइक सूरत दी⁵⁹ फिर राह दिखाई⁶⁰ बोला⁶¹ अगली संगतों

الْقُرُونِ الْأُولَىٰ ﴿۵۱﴾ قَالَ عَلِمَهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَضِلُّ رَبِّي

का क्या हाल है⁶² कहा उन का इल्म मेरे रब के पास एक किताब में है⁶³ मेरा रब न बहके

وَلَا يَنْسَى ۗ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَوَسَّلَ لَكُم فِيهَا سُبُلًا

न भूले वोह जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछोना किया और तुम्हारे लिये इस में चलती राहें रखीं

وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ﴿۵۲﴾

और आस्मान से पानी उतारा⁶⁴ तो हम ने उस से तरह तरह के सब्जे के जोड़े निकाले⁶⁵

कटए उड़्र हो जाए और हकीकत में होना तो बोही है जो तक्दरे इलाही है । 51 : अपनी मदद से 52 : उस के कौल व फे'ल को 53 : और उन्हें बन्दगी व असीरी से रिहा कर दे 54 : मेहनत व मशक्कत के सख्त काम ले कर । 55 : या'नी मो'जिजे जो हमारे सिदके नुबुव्वत की दलील हैं । फिरऔन ने कहा : वोह क्या हैं ? तो आप ने मो'जिजे यदे बैजा (सूरज की तरह हाथ चमकने का मो'जिजा) दिखाया । 56 : या'नी दोनों जहान में उस के लिये सलामती है वोह अज़ाब से महफूज रहेगा । 57 : हमारी नुबुव्वत को और उन अहकाम को जो हम लाए । 58 : हमारी हिदायत से । हज़रते मूसा व हज़रते हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام ने फिरऔन को येह पैगाम पहुंचा दिया तो वोह 59 : हाथ को इस के लाइक ऐसी कि किसी चीज को पकड़ सके, पाउं को इस के काबिल कि चल सके, ज़बान को इस के मुनासिब कि बोल सके, आंख को इस के मुवाफ़िक कि देख सके, कान को ऐसी कि सुन सके । 60 : और इस की मा'रिफ़त दी कि दुन्या की ज़िन्दगानी और आखिरत की सआदत के लिये **اَللّٰهُ** की अता की हुई ने'मतों को किस तरह काम में लाया जाए । 61 : फिरऔन 62 : या'नी जो उम्मतें गुजर चुकी हैं मिस्ल कौमे नूह व आद व समूद के जो बुतों को पूजते थे और बअसे बा'दल मौत या'नी मरने के बा'द ज़िन्दा कर के उठाए जाने के मुन्किर थे, इस पर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने 63 : या'नी लौहे महफूज में उन के तमाम अहवाल मक्तूब हैं, रोजे कियामत उन्हें इन आ'माल पर जज़ा दी जाएगी । 64 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का कलाम तो यहां तमाम हो गया अब **اَللّٰهُ** तआला अहले मक्का को खिताब कर के इस की तत्मीम फ़रमाता है 65 : या'नी किस किस के सब्जे मुख़्तलिफ़ रंगतों ख़ुशबूओं शक्तों के, बा'ज आदमियों के लिये बा'ज जानवरों के लिये ।

۲۰

كُلُّوْا وَاْرْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لٰآيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝۵۴ مِنْهَا

तुम खाओ और अपने मवेशियों को चराओ⁶⁶ बेशक इस में निशानियां हैं अक्ल वालों को हम ने ज़मीन

خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نَعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اٰخْرٰى ۝۵۵ وَلَقَدْ

ही से तुम्हें बनाया⁶⁷ और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे⁶⁸ और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे⁶⁹ और बेशक हम

اَرٰىنٰهُ اٰيٰتِنَا كَلٰهًا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ۝۵۶ قَالَ اٰجِئْنَا لِيُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا

ने उसे⁷⁰ अपनी सब निशानियां⁷¹ दिखाई तो उस ने झुटलाया और न माना⁷² बोला क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो कि हमें अपने जादू के सबब हमारी

بِسِحْرِكَ يٰمُوسٰى ۝۵۷ فَلَمَّا تَبَيَّنَكَ بِسِحْرِ مِثْلِهِ فَاَجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ

ज़मीन से निकाल दो ऐ मूसा⁷³ तो ज़रूर हम भी तुम्हारे आगे वैसा ही जादू लाएंगे⁷⁴ तो हम में और अपने में एक

مَوْعِدًا اَلَّا نَخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَا اَنْتَ مَكَانًا سُوّٰى ۝۵۸ قَالَ مَوْعِدُكُمْ

वा'दा ठहरा दो जिस से न हम बदला लें (आगे पीछे हों) न तुम हमवार जगह हो मूसा ने कहा तुम्हारा वा'दा

يَوْمِ الزِّيْتَةِ وَاَنْ يُحْشَرَ النَّاسُ ضَحٰى ۝۵۹ فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فُجْعًا كَيْدًا

मेले का दिन है⁷⁵ और यह कि लोग दिन चढ़े जम्भू किये जाएं⁷⁶ तो फिरऔन फिरा और अपने दाउं (मक्रो फरेब) इकठ्ठे किये⁷⁷

ثُمَّ اٰتٰى ۝۶۰ قَالَ لَهُمْ مُّوسٰى وَيَلِكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلٰى اللّٰهِ كِذٰبًا فَيُسْحِتَكُمْ

फिर आया⁷⁸ उन से मूसा ने कहा तुम्हें खराबी हो **अल्लाह** पर झूट न बांधो⁷⁹ कि वोह तुम्हें अज़ाब

بِعَذَابٍ وَّوَقَدْ خَابَ مَنۢ اَفْتَرٰى ۝۶۱ فَتَنَّا زُجُرًا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسْرٰوَا

से हलाक कर दे और बेशक ना मुराद रहा जिस ने झूट बांधा⁸⁰ तो अपने मुआमले में बाहम मुख़लिफ़ हो गए⁸¹ और छुप कर

66 : यह अग्ने इबाहत और तच्छीरे ने'मत के लिये है या'नी हम ने यह सब्जे निकाले तुम्हारे लिये इन का खाना और अपने जानवरों को चराना

मुबाह कर के । 67 : तुम्हारे ज़दे आ'ला हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** को इस से पैदा कर के । 68 : तुम्हारी मौत व दफ़न के वक़्त 69 : रोज़े क्रियामत ।

70 : या'नी फिरऔन को 71 : या'नी कुल आयाते तिस्र (नव निशानियां) जो हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** को अता फ़रमाई थीं । 72 : और उन

आयात को सेहर बताया और कबूले हक़ से इन्कार किया और 73 : या'नी हमें मिस्र से निकाल कर खुद इस पर कब्ज़ा करो और बादशाह

बन जाओ । 74 : और जादू में हमारा और तुम्हारा मुकाबला होगा 75 : इस मेले से फिरऔनियों का मेला मुराद है जो उन की ईद थी और

उस में वोह जीनतें कर कर के जम्भू होते थे । हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि यह दिन आशूरा या'नी दसवीं मुहर्रम था

और उस साल यह तारीख़ सनीचर को वाक़ेअ हुई थी । इस रोज़ को हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने इस लिये मुअय्यन फ़रमाया कि यह रोज़

उन की ग़ायते शौकत का दिन था, इस को मुकर्रर करना अपने कमाले कुव्वत का इज़हार है, नीज़ इस में येह भी हिकमत थी कि हक़ का जुहर

और बातिल की रुस्वाई के लिये ऐसा ही वक़्त मुनासिब है जब कि अत्राफ़ व जवानिब के तमाम लोग मुज्तमअ हों । 76 : ताकि ख़ुब रोशनी

फैल जाए और देखने वाले ब इत्मीनान देख सकें और हर चीज़ साफ़ साफ़ नज़र आए । 77 : कसीरुत्ता'दाद जादूगरों को जम्भू किया

78 : वा'दे के दिन उन सब को ले कर 79 : किसी को उस का शरीक कर के 80 : **अल्लाह** तआला पर । 81 : या'नी जादूगर हज़रते मूसा

عَلَيْهِ السَّلَام का येह कलाम सुन कर आपस में मुख़लिफ़ हो गए । बा'ज़ कहने लगे कि येह भी हमारी मिसल जादूगर हैं । बा'ज़ ने कहा कि येह

बातें ही जादूगरों की नहीं, वोह **अल्लाह** पर झूट बांधने को मन्अ करते हैं ।

النَّجْوَى ۱۲) قَالُوا إِنْ هَذَا سِحْرٌ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُم مِّنْ

मश्वरत की बोले बेशक ये दोनों⁸² ज़रूर जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी

أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمْ وَأَيْدِيَهُمْ يُقْتِكُمُ الْمَثَلِي ۱۳) فَأَجْعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ

जमीन से अपने जादू के जोर से निकाल दें और तुम्हारा अच्छा दिन ले जाएं तो अपना दाउं (फ़रेब) पक्का कर लो फिर

اتَّوَصَّفَاءَ وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَى ۱۴) قَالُوا أَيُّوَسَىٰ إِمَّا أَنْ

परा बांध (सफ़ बना) कर आओ और आज मुराद को पहुंचा जो ग़ालिब रहा बोले⁸³ ऐ मूसा या तो

تُلْقَىٰ وَإِمَّا أَنْ تَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَى ۱۵) قَالَ بَلْ أَلْقُوا فَإِذَا

तुम डालो⁸⁴ या हम पहले डालें⁸⁵ मूसा ने कहा बल्कि तुम्हीं डालो⁸⁶ जभी

جِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَى ۱۶) فَأَوْجَسَ فِي

उन की रस्सियां और लाठियां उन के जादू के जोर से उन के खयाल में दौड़ती मा'लूम हुई⁸⁷ तो अपने

نَفْسِهِ خَيْفَةً مُّوسَى ۱۷) قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى ۱۸) وَأَلْقَى مَا

जो में मूसा ने खौफ़ पाया हम ने फ़रमाया डर नहीं बेशक तू ही ग़ालिब है और डाल तो दे जो

فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا إِنَّا صَنَعُوا كَيْدُ سِحْرٍ ط وَلَا يُفْلِحُ

तेरे दहने हाथ में है⁸⁸ वोह उन की बनावटों को निगल जाएगा वोह जो बना कर लाए हैं वोह तो जादूगर का फ़रेब है और जादूगर

السَّحْرِ حَيْثُ أَتَى ۱۹) فَأَلْقَى السَّحْرَةَ سُجَّدًا قَالُوا امْنَابِرِبْ هُرُونَ

का भला नहीं होता कहीं आवे⁸⁹ तो सब जादूगर सज्दे में गिरा लिये गए बोले हम उस पर ईमान लाए जो हारून और मूसा

وَمُوسَى ۲۰) قَالَ امْنَتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنَىٰ لَكُمْ ط إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمْ الَّذِي

का रब है⁹⁰ फिर औन बोला क्या तुम इस पर ईमान लाए कबल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं बेशक वोह तुम्हारा बड़ा है जिस ने

82 : या'नी हज़रते मूसा व हज़रते हारून (عليهما السلام) 83 : जादूगर 84 : पहले अपना असा 85 : अपने सामान । इत्तिदा करना जादूगरों ने अदबन हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की राए मुबारक पर छोड़ा और इस की बरकत से आखिर कार **ALLAH** तआला ने उन्हें दौलते ईमान से मुशर्रफ़ फ़रमाया । 86 : येह हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इस लिये फ़रमाया कि जो कुछ जादू के मक्र हैं पहले वोह सब ज़ाहिर कर चुकें इस के बा'द आप मो'जिज़ा दिखाएं और हक़ बातिल को मिटाए और मो'जिज़ा सेहूर को बातिल करे तो देखने वालों को बसीरत व इब्रत हासिल हो । चुनान्चे, जादूगरों ने रस्सियां लाठियां वगैरा जो सामान लाए थे सब डाल दिया और लोगों की नज़र बन्दी कर दी । 87 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने देखा कि जमीन सांपों से भर गई और मीलों के मैदान में सांप ही सांप दौड़ रहे हैं और देखने वाले इस बातिल नज़र बन्दी से मसहूर हो गए, कहीं ऐसा न हो कि बा'ज़ मो'जिज़ा देखने से पहले ही इस के गिरवीदा हो जाएं और मो'जिज़ा न देखें । 88 : या'नी अपना असा 89 : फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना असा डाला वोह जादूगरों के तमाम अज़्दहों और सांपों को निगल गया और आदमी उस के खौफ़ से घबरा गए । हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे अपने दस्ते मुबारक में लिया तो मिस्ले साबिक असा हो गया, येह देख कर जादूगरों को यकीन

عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَا قَطْعَنَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَ

तुम सब को जादू सिखाया⁹¹ तो मुझे कसम है ज़रूर मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाउं काटूंगा⁹² और

لَأَوْصَلِبَّيْكُمْ فِي جُدُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلُنَّ أَيْنًا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَى ۝۱

तुम्हें खजूर के डुन्ड (सूखे तने) पर सूली चढ़ाऊंगा और ज़रूर तुम जान जाओगे कि हम में किस का अज़ाब सख्त और देर पा है⁹³

قَالُوا لَنْ نُؤْتِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيْتِ وَالزَّيْفَ فَطَرْنَا فَاقْضِ

बोले हम हरगिज़ तुझे तरजीह न देंगे उन रोशन दलीलों पर जो हमारे पास आई⁹⁴ हमें अपने पैदा करने वाले की कसम तो तू कर चुक

مَا أَنْتَ قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝۲

जो तुझे करना है⁹⁵ तू इस दुनिया ही की ज़िन्दगी में तो करेगा⁹⁶ बेशक हम अपने रब पर ईमान लाए

لِيَغْفِرَ لَنَا خَطِيئَاتِنَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۖ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَوْ

कि वोह हमारी ख़ताएं बख़्शा दे और वोह जो तू ने हमें मजबूर किया जादू पर⁹⁷ और **اَللّٰهُ** बेहतर है⁹⁸ और

أَبْقَى ۝۳ إِنَّهُ مَن يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ ۖ لَا يَمُوتُ فِيهَا

सब से ज़ियादा बाक़ी रहने वाला⁹⁹ बेशक जो अपने रब के हुज़ूर मुजरिम¹⁰⁰ हो कर आए तो ज़रूर उस के लिये जहन्नम है जिस में न मरे¹⁰¹

وَلَا يَحْيَىٰ ۝۴ وَمَن يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُم

न जिये¹⁰² और जो उस के हुज़ूर ईमान के साथ आए कि अच्छे काम किये हों¹⁰³ तो उन्हीं के

हुवा कि येह मो'जिजा है जिस से सेहूर मुकाबला नहीं कर सकता और जादू की फ़रेब कारी इस के सामने काइम नहीं रह सकती। 90 : क्या अज़ीब हाल था, जिन लोगों ने अभी कुफ़्र व जुहूद के लिये रस्सियां और असा डाले थे अभी मो'जिजा देख कर उन्हों ने शुक्र व सुजूद के लिये सर झुका दिये और गरदनें डाल दीं, मन्कूल है कि इस सज्दे में उन्हे जन्नत और दोख़ दिखाई गई और इन्हों ने जन्नत में अपने मनाज़िल देख लिये। 91 : या'नी जादू में वोह उस्तादे कामिल और तुम सब से फ़ाइक़ है। 92 : (مَعَاذَ اللَّهِ) या'नी दहने हाथ और बाएं पाउं 93 : इस से फिरऔन मल्लूक़न की मुराद येह थी कि उस का अज़ाब सख्त तर है, या रब्बुल आलमीन का। फिरऔन का येह मुतकब्बिराना कलिमा सुन कर वोह जादूगर 94 : यंदे बैजा और असाए मूसा। बा'ज मुफ़स्सरीन ने कहा है कि उन का इस्तदलाल येह था कि अगर तू हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़े को भी सेहूर कहता है तो बता वोह रस्से और लाटियां कहां गई ? बा'ज मुफ़स्सरीन कहते हैं कि बय्यिनात से मुराद जन्नत और उस में अपने मनाज़िल का देखना है। 95 : हमें इस की कुछ परवा नहीं 96 : आगे तो तेरी कुछ मजाल नहीं और दुनिया जाइल और यहां की हर चीज़ फ़ना होने वाली है, तू मेहरबान भी हो तो बकाए दवाम नहीं दे सकता, फिर ज़िन्दगानिये दुनिया और इस की राहतों के ज्वाल का क्या गुम, बिल खुमूस उस को जो जानता है कि आखिरत में आ'माले दुनिया की जज़ा मिलेगी। 97 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुकाबले में। बा'ज मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि फिरऔन ने जब जादूगरों को हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुकाबले के लिये बुलाया था तो जादूगरों ने फिरऔन से कहा था कि हम हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को सोता हुवा देखना चाहते हैं, चुनान्चे इस की कोशिश की गई और उन्हे ऐसा मौक़अ बहम पहुंचा दिया गया, उन्हों ने देखा कि हज़रत ख़्वाब में हैं और असा शरीफ़ पहरा दे रहा है, येह देख कर जादूगरों ने फिरऔन से कहा कि मूसा जादूगर नहीं हैं क्यूं कि जादूगर जब सोता है तो उस वक़्त उस का जादू काम नहीं करता, मगर फिरऔन ने उन्हे जादू करने पर मजबूर किया, उस की मग़िफ़रत के वोह **اَللّٰهُ** तआला से तालिब और उम्मीद वार हैं। 98 : फ़रमां बरदारों को सवाब देने में 99 : ब लिहाज़ अज़ाब करने के ना फ़रमातों पर। 100 : या'नी काफ़िर मिस्ल फिरऔन के 101 : कि मर कर ही इस से छूट सके। 102 : ऐसा जीना जिस से कुछ नपअ उठा सके। 103 : या'नी जिन का ईमान पर ख़ातिमा हुवा हो और उन्हों ने अपनी ज़िन्दगी में नेक अमल किये हों फ़राइज़ और नवाफ़िल बजा लाए हों।

الدَّرَجَاتُ الْعُلَى ۝ جِئْتُمْ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَلِيدِينَ

درजे ऊंचे बसने के बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा उन में

فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّى ۝ وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى ۝ أَنْ أَسْرِ

रहें और यह सिला है उस का जो पाक हुआ¹⁰⁴ और बेशक हम ने मूसा को वहुय की¹⁰⁵ कि रातों रात मेरे

بِعِبَادِي فَاصْرَبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۝ لَا تَخَفْ دَرَكًا وَلَا

बन्दों को ले चल¹⁰⁶ और उन के लिये दरिया में सूखा रास्ता निकाल दे¹⁰⁷ तुझे डर न होगा कि फिरऔन आ ले और न

تَخْشَى ۝ فَاتَّبِعْهُمْ فَرْعُونَ بِجُنُودِهِمْ فَعَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا عَشِيَهُمْ ۝

खतरा¹⁰⁸ तो उन के पीछे फिरऔन पड़ा अपने लश्कर ले कर¹⁰⁹ तो उन्हें दरिया ने ढांप लिया जैसा ढांप लिया¹¹⁰

وَأَصْلَ فَرْعُونَ قَوْمَهُ وَمَاهِدَى ۝ يُبْنِي إِسْرَائِيلَ قَدْ أَنْجَيْنَاكَ

और फिरऔन ने अपनी कौम को गुमराह किया और राह न दिखाई¹¹¹ ऐ बनी इसराईल बेशक हम ने तुम को तुम्हारे

مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَعَدْنَاكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ

दुश्मन¹¹² से नजात दी और तुम्हें तूर की दहनी तरफ़ का वा'दा दिया¹¹³ और तुम पर मन्न और

وَالسَّلْوى ۝ كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ

सल्वा उतारा¹¹⁴ खाओ जो पाक चीज़ें हम ने तुम्हें रोज़ी दीं और इस में ज़ियादती न करो¹¹⁵ कि तुम पर

عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۝ وَمَنْ يَحِلَّلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَى ۝ وَإِنِّي لَغَفَّارٌ

मेरा ग़ज़ब उतरे और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा बेशक वोह गिरा¹¹⁶ और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूँ

لِّمَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَى ۝ وَمَا أَعْجَلَكَ عَنْ

उसे जिस ने तौबा की¹¹⁷ और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा¹¹⁸ और तू ने अपनी कौम से

104 : कुफ़्र की नजासत और मअ़ासी की गन्दगी से । 105 : जब कि फिरऔन मो'जिज़ात देख कर राह पर न आया और पन्द पज़ीर न हुआ और बनी इसराईल पर जुल्मो सितम और ज़ियादा करने लगा । 106 : मिस्र से और जब दरिया के किनारे पहुंचें और फिरऔनी लश्कर पीछे से आए तो अन्देशा न कर 107 : अपना अ़सा मार कर 108 : दरिया में गर्क होने का । मूसा عَلَيْهِ السَّلَام हुक्मे इलाही पा कर शब के अब्वल वक़्त सत्तर हजार बनी इसराईल को हमराह ले कर मिस्र से रवाना हो गए । 109 : जिन में छ^० लाख क़िब्बी थे । 110 : वोह गर्क हो गए और पानी उन के सरों से ऊंचा हो गया । 111 : इस के बा'द اَبْلَاحُ तआला ने अपने और एहसान का ज़िक्र किया और फ़रमाया : 112 : या'नी फिरऔन और उस की कौम 113 : कि हम मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को वहां तौरैत अ़ता फ़रमाएंगे जिस पर अ़मल किया जाए 114 : तीह में और फ़रमाया : 115 : नाशक़ी और कुफ़्राने ने'मत कर के और इन ने'मतों को मअ़ासी और गुनाहों में ख़र्च कर के या एक दूसरे पर जुल्म कर के 116 : जहन्नम में और हलाक हुआ । 117 : शिर्क से 118 : ता दमे आख़िर ।

قَوْمَكَ يُّوسَىٰ ﴿٨٣﴾ قَالَ هُمْ أَوْلَاءٌ عَلَيَّ أَثَرِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ

क्यूं जल्दी की ऐ मूसा¹¹⁹ अर्ज की कि वोह येह हैं मेरे पीछे और ऐ मेरे रब तेरी तरफ मैं जल्दी कर के हाज़िर हुवा

لِتَرْضَىٰ ﴿٨٤﴾ قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ

कि तू राजी हो¹²⁰ फरमाया तो हम ने तेरे आने के बा'द तेरी कौम को¹²¹ बला में डाला और उन्हें सामिरी

السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾ فَرَجَعَ مُوسَىٰ اِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ اَسِفًا قَالَ يَقَوْمِ

ने गुमराह कर दिया¹²² तो मूसा अपनी कौम की तरफ पलटा¹²³ गुस्से में भरा अफ़सोस करता¹²⁴ कहा ऐ मेरी कौम

اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعَدًّا حَسَنًا اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَادْتُمْ

क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वा'दा न किया था¹²⁵ क्या तुम पर मुद्दत लम्बी गुज़री या तुम ने चाह

اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِي ﴿٨٦﴾ قَالُوْا مَا

कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे तो तुम ने मेरा वा'दा ख़िलाफ़ किया¹²⁶ बोले हम ने

اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلِكِنَا وَلَكِنَّا حَمِلْنَا اَوْذَارًا مِّنْ زِينَةِ الْقَوْمِ

आप का वा'दा अपने इख़्तियार से ख़िलाफ़ न किया लेकिन हम से कुछ बोझ उठवाए गए इस कौम के गहने के¹²⁷

فَقَدَفْنَاهَا فَاِذْ لَكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾ فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا

तो हम ने उन्हें¹²⁸ डाल दिया फिर इसी तरह सामिरी ने डाला¹²⁹ तो उस ने उन के लिये एक बछड़ा निकाला बेजान का धड़

لَهُ خُوَارٍ فَقَالُوْا هٰذَا اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوسَىٰ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾ اَفَلَا يَرَوْنَ

गाय की तरह बोलता¹³⁰ तो बोले¹³¹ येह है तुम्हारा मा'बूद और मूसा का मा'बूद मूसा तो भूल गए¹³² तो क्या नहीं देखते

119 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَامُ जब अपनी कौम में से सत्तर आदमियों को मुन्तखब कर के तौरैत लेने तूर पर तशरीफ ले गए फिर कलामे परवर्दगार के शौक में उन से आगे बढ़ गए उन्हें पीछे छोड़ दिया और फरमा दिया कि मेरे पीछे पीछे चले आओ, इस पर **اَعْلَىٰ** तबारक व तआला ने फरमाया : وَمَا اَعْجَلَك (और तू ने अपनी कौम से क्यूं जल्दी की ऐ मूसा !) तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَامُ ने 120 : या'नी तेरी रिज़ा और जियादा हो । **मस्अला** : इस आयत से इज्तिहाद का जवाज़ साबित हुवा । (**مَارَك**) 121 : जिन्हें आप ने हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَامُ के साथ छोड़ा है । 122 : गौसाला परस्ती की दा'वत दे कर । **मस्अला** : इस आयत में इज़लाल या'नी गुमराह करने की निस्वत सामिरी की तरफ़ फ़रमाई गई क्यूं कि वोह इस का सबब व बाइस हुवा, इस से साबित हुवा कि किसी चीज़ को सबब की तरफ़ निस्वत करना जाइज़ है । इसी तरह कह सकते हैं कि मां बाप ने परवरिश की, दीनी पेशवाओं ने हिदायत की, औलिया ने हाज़त रवाई फ़रमाई, बुजुर्गों ने बला दफ़अ की । मुफ़रिसरीन ने फ़रमाया है कि उमूर जाहिर में मन्शा व सबब की तरफ़ मन्सूब कर दिये जाते हैं अगर्चे हकीकत में इन का मूजिद **اَعْلَىٰ** तआला है और कुरआने करीम में ऐसी निस्वतें ब कसरत वारिद हैं । (**عَارُونَ**) 123 : चालीस दिन पूरे कर के तौरैत ले कर 124 : उन के हाल पर 125 : कि वोह तुम्हें तौरैत अता फ़रमाएगा जिस में हिदायत है, नूर है, हज़ार सूरतें हैं, हर सूरत में हज़ार आयतें हैं । 126 : और ऐसा नाकिस काम किया कि गौसाला को पूजने लगे, तुम्हारा वा'दा तो मुझ से येह था कि मेरे हुक्म की इताअत करोगे और मेरे दीन पर काइम रहोगे 127 : या'नी कौम फ़िरऔन के ज़ेवरों के जो बनी इसराईल ने उन लोगों से आरियत के तौर पर मांग लिये थे । 128 : सामिरी के हुक्म से आग में 129 : उन ज़ेवरों को जो उस के पास थे और उस ख़ाक को जो हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَامُ के घोड़े के कदम के नीचे से उस ने हासिल की थी । 130 : येह बछड़ा सामिरी ने बनाया और उस में कुछ सूराख़ इस तरह रखे कि जब उन में हवा दाख़िल हो तो उस से बछड़े की

أَلَا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا ۗ وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ صَرًّا وَلَا نَفْعًا ۙ (۸۹) وَلَقَدْ

कि वोह¹³³ उन्हें किसी बात का जवाब नहीं देता और उन के किसी बुरे भले का इख्तियार नहीं रखता¹³⁴ और बेशक

قَالَ لَهُمْ هُرُونَ مِنْ قَبْلِ يَوْمِ اتِّمَافْتِنْتُمْ بِهِ ۚ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ

उन से हारून ने इस से पहले कहा था कि ऐ मेरी कौम यूँही है कि तुम इस के सबब फितने में पड़े¹³⁵ और बेशक तुम्हारा रब रहमान है

فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ۙ (۹۰) قَالُوا لَنْ نَبْرَحَ عَلَيْهِ عَكْفَيْنَ حَتَّىٰ

तो मेरी पैरवी करो और मेरा हुक्म मानो बोले हम तो इस पर आसन मारे जमे (पूजा के लिये जम कर बैठे) रहेंगे¹³⁶ जब तक

يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ۙ (۹۱) قَالَ يَهُرُونَ وَمَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ۙ (۹۲)

हमारे पास मूसा लौट के आएँ¹³⁷ मूसा ने कहा ऐ हारून तुम्हें किस बात ने रोका था जब तुम ने इन्हें गुमराह होते देखा था

أَلَا تَتَّبِعَنِ ۙ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ۙ (۹۳) قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَ

कि मेरे पीछे आते¹³⁸ तो क्या तुम ने मेरा हुक्म न माना कहा ऐ मेरे मां जाए न मेरी दाढ़ी पकड़ो और

لَا بِرَأْسِي ۚ إِنِّي خَشِيتُ أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَمْ

न मेरे सर के बाल मुझे ये डर हुआ कि तुम कहोगे तुम ने बनी इसराईल में तफ़ीका डाल दिया और तुम ने

تَرَقَّبْتُ قَوْلِي ۙ (۹۴) قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يُسَامِرِي ۙ (۹۵) قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ

मेरी बात का इन्तिज़ार न किया¹³⁹ मूसा ने कहा अब तेरा क्या हाल है ऐ सामिरी¹⁴⁰ बोला मैं ने वोह देखा जो

يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ

लोगों ने न देखा¹⁴¹ तो एक मुछी भर ली फिर श्ते के निशान से फिर उसे डाल दिया¹⁴² और

आवाज़ की तरह आवाज़ पैदा हो। एक कौल येह भी है कि वोह अस्पे जिब्रील की खाके जेरे क़दम डालने से जिन्दा हो कर बछड़े की तरह बोलता था। 131 : सामिरी और उस के मुत्तबिईन 132 : या'नी मूसा मा'बूद को भूल गए और इस को यहां छोड़ कर इस की जुस्तजू में तूर पर चले गए। (مَعَادُ اللَّهِ) बा'ज मुफ़रिसरीन ने कहा कि نَسِي का फ़ाइल सामिरी है और मा'ना येह हैं कि सामिरी ने जो बछड़े को मा'बूद बनाया वोह अपने रब को भूल गया या वोह हुदूसे अज्सांम से इस्तदलाल करना भूल गया। 133 : बछड़ा 134 : ख़िताब से भी आजिज़ और नफ़अ व जरर से भी, वोह किस तरह मा'बूद हो सकता है। 135 : तो इसे न पूजो 136 : गौसाला परस्ती पर काइम रहेंगे और तुम्हारी बात न मानेंगे 137 : इस पर हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام उन से अलाहदा हो गए और उन के साथ बारह हज़ार वोह लोग जिन्हों ने बछड़े की परस्तिश न की थी, जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام वापस तशरीफ़ लाए तो आप ने उन के शोर मचाने और बाजे बजाने की आवाज़ें सुनीं जो बछड़े के गिर्द नाचते थे, तब आप ने अपने सत्तर हमराहियों से फ़रमाया येह फ़ितने की आवाज़ है, जब करीब पहुंचे और हज़रते हारून को देखा तो गैरते दीनी से जो आप की सिरिशत (फ़ितरत) थी जोश में आ कर उन के सर के बाल दाहने हाथ में और दाढ़ी बाएं में पकड़ी और 138 : और मुझे खबर दे देते या'नी जब इन्हों ने तुम्हारी बात न मानी थी तो तुम मुझ से क्यूं नहीं आ मिले कि तुम्हारा इन से जुदा होना भी इन के हक़ में एक ज़र्र होता। 139 : येह सुन कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام सामिरी की तरफ़ मुतवज्जेह हुए चुनान्चे 140 : तू ने ऐसा क्यूं किया इस की वज्ह बता 141 : या'नी मैं ने हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को देखा और उन को पहचान लिया, वोह अस्पे हयात (जन्ती घोड़े बुराक) पर सुवार थे, मेरे दिल में येह बात आई कि मैं इन के घोड़े के निशाने क़दम की खाक ले लूं 142 : उस बछड़े में जिस को बनाया था।

سَوَّلْتُ لِي نَفْسِي ۹۶ قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَنْ تَقُولَ لَا

मेरे जी को येही भला लगा¹⁴³ कहा तू चलता बन¹⁴⁴ कि दुन्या की ज़िन्दगी में तेरी सज़ा येह है कि¹⁴⁵ तू कहे

مِسَاسٌ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَنْ تُخْلَفَهُ وَانظُرْ إِلَى إِلْهِكَ الَّذِي ظَلْتَ

छू न जा¹⁴⁶ और बेशक तेरे लिये एक वा'दे का वक़्त है¹⁴⁷ जो तुझ से ख़िलाफ़ न होगा और अपने इस मा'बूद को देख जिस के सामने तू दिन भर आसन

عَلَيْهِ عَاكِفًا لَنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۹۷ إِنَّمَا إِلْهُكُم

मारे (पूजा के लिये बैठा) रहा¹⁴⁸ क़सम है हम ज़रूर इसे जलाएंगे फिर रेज़ा रेज़ा कर के दरिया में बहाएंगे¹⁴⁹ तुम्हारा मा'बूद तो वोही

اللَّهُ الَّذِي لَا إِلْهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۹۸ كَذَلِكَ نَقُصُّ

अल्लाह है जिस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ को उस का इल्म मुहीत है हम ऐसा ही

عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ۹۹ مَنْ

तुम्हारे सामने अगली ख़बरें बयान फ़रमाते हैं और हम ने तुम को अपने पास से एक ज़िक्र अता फ़रमाया¹⁵⁰ जो

أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ۱۰۰ خَلِدِينَ فِيهِ وَسَاءَ

उस से मुंह फेरे¹⁵¹ तो बेशक वोह क़ियामत के दिन एक बोझ उठाएगा¹⁵² वोह हमेशा उस में रहेंगे¹⁵³ और वोह क़ियामत

لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ۱۰۱ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ

के दिन उन के हक़ में क्या ही बुरा बोझ होगा जिस दिन सूर फूँका जाएगा¹⁵⁴ और हम उस दिन मुजरिमों को¹⁵⁵ उठाएंगे

يَوْمَئِذٍ رُزُقًا ۱۰۲ يَتَخَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۱۰۳ نَحْنُ

नीली आंखें¹⁵⁶ आपस में चुपके चुपके कहते होंगे कि तुम दुन्या में न रहे मगर दस रात¹⁵⁷ हम

143 : और येह फ़े'ल मैं ने अपने ही हवाए नफ़स से किया, कोई दूसरा इस का बाइस व मुह्रिक न था। इस पर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने 144 :

दूर हो जा 145 : जब तुझ से कोई मिलना चाहे तो तेरे हाल से वाकिफ़ न हो तो उस से 146 : या'नी सब से अलाहदा रहना न तुझ से कोई छूए

न तू किसी से छूए। लोगों से मिलना उस के लिये कुल्ली तौर पर मन्मूअ करार दिया गया और मुलाक़ात मुक़ालमत ख़रीदो फ़रोख़्त हर एक

के साथ ह़राम कर दी गई और अगर इत्तिफ़ाक़न कोई उस से छू जाता तो वोह और छूने वाला दोनों शदीद बुख़ार में मुब्तला होते, वोह जंगल

में येही शोर मचाता फिरता था कि कोई छू न जाना और वहशियों और दरिन्दों में ज़िन्दगी के दिन निहायत तलख़ी व वहशत में गुज़ारता

था। 147 : या'नी अज़ाब के वा'दे का आख़िरत में बा'द इस अज़ाबे दुन्या के, तेरे शिकों फ़साद अंगेज़ी पर 148 : और इस की इबादत पर

काइम रहा 149 : चुनान्चे, हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ऐसा किया और जब आप सामिरी के इस फ़साद को मिटा चुके तो बनी इसराइल

से मुखात़बा फ़रमा कर दीने हक़ का बयान फ़रमाया और इर्शाद किया 150 : या'नी कुरआने पाक कि वोह ज़िक़े अज़ीम है और जो इस की

तरफ़ मुतवज्जेह हो उस के लिये इस किताबे करीम में नजात और बरकतें हैं और इस किताबे मुक़द्दस में उममे माज़िया (गुज़स्ता उम्मतों) के

ऐसे हालात का ज़िक़ व बयान है जो फ़िक़र करने और इब्रत हासिल करने के लाइक़ हैं। 151 : या'नी कुरआन से और उस पर इमّान न लाए

और उस की हिदायतों से फ़ाएदान न उठाए 152 : गुनाहों का बारे गिरां 153 : या'नी इस गुनाह के अज़ाब में 154 : लोगों को महशर में हाज़िर

करने के लिये, मुराद इस से नफ़ख़ए सानिया (दूसरी मरतबा सूर का फूँका जाना) है। 155 : या'नी काफ़िरों को इस हाल में 156 : और काले

मुंह 157 : आख़िरत के अहवाल और वहां के ख़ौफ़नाक मनाज़िल देख कर उन्हें ज़िन्दग़ानिये दुन्या की मुदत बहुत क़लील मा'लूम होगी।

أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ١٥٧

159 थे खूब जानते हैं जो वोह¹⁵⁸ कहेंगे जब कि उन में सब से बेहतर राय वाला कहेगा कि तुम सिर्फ एक ही दिन रहे थे

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ١٥٨ فَيَذَرُهَا قَاعًا

और तुम से पहाड़ों को पूछते हैं¹⁶⁰ तुम फरमाओ उन्हें मेरा रब रेजा रेजा कर के उड़ा देगा तो जमीन को पट पर

صَفْصَفًا ١٥٩ لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ١٦٠ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ

हमवार कर छोड़ेगा कि तू उस में नीचा ऊंचा कुछ न देखे उस दिन पुकारने वाले

الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا

के पीछे दौड़ेंगे¹⁶¹ उस में कजी न होगी¹⁶² और सब आवाजें रहमान के हुजूर¹⁶³ पस्त हो कर रह जाएंगी तो तू न सुनेगा मगर बहुत

هَيْسًا ١٦١ يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَرَضِيَ

आहिस्ता आवाज¹⁶⁴ उस दिन किसी की शफाअत काम न देगी मगर उस की जिसे रहमान ने¹⁶⁵ इज्ज दे दिया है और उस की

لَهُ قَوْلًا ١٦٢ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ

बात पसन्द फरमाई वोह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे¹⁶⁶ और उन का इल्म उसे नहीं

عِلْمًا ١٦٣ وَعَنْتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ ١٦٤ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ١٦٥

घेर सकता¹⁶⁷ और सब मुंह झुक जाएंगे उस जिन्दा काइम रखने वाले के हुजूर¹⁶⁸ और बेशक ना मुराद रहा जिस ने जुल्म का बोझ लिया¹⁶⁹

158 : आपस में एक दूसरे से 159 : बा'ज मुफस्सरीने ने कहा कि वोह उस दिन के शदाइद देख कर अपने दुनिया में रहने की मिक्दार भूल जाएंगे। 160 शाने नुजूल : हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهم ने फरमाया कि कबीलए सकीफ के एक आदमी ने रसूल करीम صلى الله تعالى عليه وسلم से दरयाफ्त किया कि कियामत के दिन पहाड़ों का क्या हाल होगा ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 161 : जो उन्हें रोजे कियामत मौक़िफ (मैदाने महशर) की तरफ बुलाएगा और निदा करेगा कि चलो रहमान के हुजूर पेश होने को और येह पुकारने वाले हज़रते इसराफ़ील होंगे। 162 : और इस दा'वत से कोई इन्हिराफ न कर सकेगा। 163 : हैबत व जलाल से 164 : हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهم ने फरमाया ऐसी कि उस में सिर्फ लबों की जुम्बिश होगी। 165 : शफाअत करने का 166 : या'नी तमाम माज़ियात व मुस्तक़िबलात और जुम्ला उमूरे दुन्या व आख़िरत या'नी **الصلوات** तआला का इल्म बन्दों की जातो सिफ़ात और जुम्ला हालात को मुहीत हैं। 167 : या'नी तमाम काएनात का इल्म जाते इलाही का इहाता नहीं कर सकता, उस की जात का इद्राक उलूमे काएनात की रसाई से बरतर है, वोह अपने अस्मा व सिफ़ात और आसारे कुदरत व शयूने हिक्मत से पहचाना जाता है :

که او بالاتراست از حد ادراک
که واقف نیست کس از کنه ذاتش

کجا در یابد او را عقل چالاک
نظر کن اندر اسماء و صفاتش

(या'नी तेज़ अक्ल भी उस की जात का इद्राक कैसे कर सकती है ? जब कि वोह तो फहमो इद्राक से बरतर है, लिहाज़ा उस की सिफ़ात व अस्मा में ग़ौरो फ़ि़क़र करो कि उस की जात व हकीकत से कोई आशना नहीं) बा'ज मुफस्सरीने ने इस आयत के मा'ना येह बयान किये हैं कि उलूमे खल्फ़ मा'लूमाते इलाहियह का इहाता नहीं कर सकते, व जाहिर येह इबारेतें दो हैं मगर मआल पर नज़र रखने वाले ब आसानी समझ लेते हैं कि फ़र्क सिर्फ ता'बीर का है। 168 : और हर एक शाने इज़्जो नियाज़ के साथ हाज़िर होगा, किसी में सरकशी न रहेगी, **الصلوات** तआला के क़हरो हुकूमत का जुहरे ताम होगा। 169 : हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهم ने इस की तफ़सीर में फरमाया : जिस ने शिर्क किया टोटे (नुक़सान) में रहा और बेशक शिर्क शदीद तरीन जुल्म है और जो इस जुल्म का ज़ेरे बार हो कर (बोझ उठा कर) मौक़िफ़ कियामत में आए उस से बढ़ कर ना मुराद कौन ?

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخْفُ ظُلْمًا وَلَا هَضْبًا ۝۱۱۲

और जो कुछ नेक काम करे और हो मुसलमान तो उसे न ज़ियादती का खौफ होगा न नुकसान का¹⁷⁰

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ

और यूंही हम ने इसे अरबी कुरआन उतारा और इस में तरह तरह से अज़ाब के वादे दिये¹⁷¹ कि कहीं

يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۝۱۱۳ فَتَعَلَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ وَلَا

उन्हें डर हो या उन के दिल में कुछ सोच पैदा करे¹⁷² तो सब से बुलन्द है **اللَّهُ** सच्चा बादशाह¹⁷³ और

تَعَجَّلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَى إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي

कुरआन में जल्दी न करो जब तक उस की वह्य तुम्हें पूरी न हो ले¹⁷⁴ और अर्ज करो कि ऐ मेरे रब मुझे

عِلْمًا ۝۱۱۴ وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ فَنَسَىٰ وَلَمْ نَجِدْ لَهُ عِزْمًا ۝۱۱۵

इल्म ज़ियादा दे और बेशक हम ने आदम को इस से पहले एक ताकीदी हुक्म दिया था¹⁷⁵ तो वोह भूल गया और हम ने उस का क़स्द न पाया

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۝۱۱۶

और जब हम ने फिरिशतों से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस उस ने न माना

فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَذَا عَدُوٌّ لَكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكَ مِنَ الْجَنَّةِ

तो हम ने फ़रमाया ऐ आदम बेशक येह तेरा और तेरी बीबी का दुश्मन है¹⁷⁶ तो ऐसा न हो कि वोह तुम दोनों को जन्नत से निकाल दे

فَتَشْتَقِي ۝۱۱۷ إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَى ۝۱۱۸ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا

फिर तू मशक्कत में पड़े¹⁷⁷ बेशक तेरे लिये जन्नत में येह है कि न तू भूका हो न नंगा हो और येह कि तुझे न उस में प्यास लगे

وَلَا تَصْحَى ۝۱۱۹ فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ

न धूप¹⁷⁸ तो शैतान ने उसे वस्वसा दिया बोला ऐ आदम क्या मैं तुम्हें बता दूँ

170 मस्अला : इस आयत से मा'लूम हुवा कि ताअत और नेक आ'माल सब की क़बूलियत ईमान के साथ मशरूत है कि ईमान हो तो सब नेकियां कारआमद हैं और ईमान न हो तो सब अमल बेकार । **171** : फ़राइज के छोड़ने और मन्मूआत का इरतिकाब करने पर । **172** : जिस से उन्हें नेकियों की रग़बत और बढियों से नफ़रत हो और वोह पन्दो नसीहत हासिल करें । **173** : जो अस्ल मालिक है और तमाम बादशाह उस के मोहताज । **174 शाने नुज़ूल** : जब हज़रते जिब्रील कुरआने करीम ले कर नाज़िल होते थे तो हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** उन के साथ साथ पढ़ते थे और जल्दी करते थे ताकि ख़ूब याद हो जाए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई, फ़रमाया गया कि आप मशक्कत न उठाएं और सूरए क़ियामह में **اللَّهُ** तआला ने खुद ज़िम्मा ले कर आप की और ज़ियादा तसल्ली फ़रमा दी । **175** : कि शजरे मन्मूआ के पास न जाएं । **176** : इस से मा'लूम हुवा कि साहिबे फ़ज़्लो शरफ़ की फ़ज़ीलत को तस्लीम न करना और उस की ता'ज़ीमी एहतिराम बजा लाने से ए'राज़ करना दलीले हसदो अ़दावत है । इस आयत में शैतान का हज़रते आदम को सज्दा न करना आप के साथ उस की दुश्मनी की दलील करार दिया गया । **177** : और अपनी ग़िज़ा और ख़ूराक के लिये ज़मीन जोतने, खेती करने, दाना निकालने, पीसने, पकाने की मेहनत में मुब्तला हो और चूंक औरत का नफ़का मर्द के ज़िम्मे है इस लिये इस तमाम मेहनत की निस्वत सिफ़ हज़रते आदम

شَجَرَةَ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَا يَبْلَى ۝۱۲۰ ۞ فَكَلَّا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهَا سَؤَاتُهَا وَسَاءَ

हमेशा जीने का पेड़¹⁷⁹ और वोह बादशाही कि पुरानी न पड़े¹⁸⁰ तो उन दोनों ने उस में से खा लिया अब उन पर उन की शर्म की चीजें जाहिर हुई¹⁸¹ और

طَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَاقِ الْجَنَّةِ ۖ وَعَصَىٰ آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَىٰ ۝۱۲۱ ۞

जनत के पते अपने ऊपर चिपकाने लगे¹⁸² और आदम से अपने रब के हुक्म में लज्जिश वाकेअ हुई तो जो मतलब चाहा था उस की राह न पाई¹⁸³

ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ۝۱۲۲ ۞ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا

फिर उसे उस के रब ने चुन लिया तो उस पर अपनी रहमत से रूजूअ फरमाई और अपने कुबें खास की राह दिखाई फरमाया कि तुम दोनों मिल कर जनत से उतरो

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ فَمَا يَا تَيْبِكُمْ مِّنِّي هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ

तुम में एक दूसरे का दुश्मन है फिर अगर तुम सब को मेरी तरफ से हिदायत आए¹⁸⁴ तो जो मेरी हिदायत का पैरव हुवा

فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ۝۱۲۳ ۞ وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً

वोह न बहके¹⁸⁵ न बद बख्त हो¹⁸⁶ और जिस ने मेरी याद से मुंह फेरा¹⁸⁷ तो बेशक उस के लिये तंग

ضَنًّا وَنَحْسُورَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَعْلَىٰ ۝۱۲۴ ۞ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ

जिन्दगानी है¹⁸⁸ और हम उसे कियामत के दिन अन्धा उठाएंगे कहेगा ऐ रब मेरे मुझे तू ने क्यूं अन्धा उठाया

وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ۝۱۲۵ ۞ قَالَ كَذَلِكِ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا ۖ وَكَذَلِكَ

में तो अंख्यारा (देखने वाला) था¹⁸⁹ फरमाएगा यूंही तेरे पास हमारी आयतें आई थीं¹⁹⁰ तू ने उन्हें भुला दिया और ऐसे ही

की तरफ फरमाई गई। 178 : हर तरह का ऐश व राहत जनत में मौजूद है कस्ब व मेहनत से बिल्कुल अम्म है। 179 : जिस को खा कर खाने वाले को दाइमी जिन्दगी हासिल हो जाती है 180 : और उस में जवाल न आए। 181 : या'नी बिहिश्ती लिबास उन के जिस्म से उतर गए। 182 : सत्र छुपाने और जिस्म ढकने के लिये। 183 : और उस दरख्त के खाने से दाइमी हयात न मिली, फिर हज़रते आदम से उतर गए। 184 : या'नी कित्ताब और रसूल। 185 : या'नी दुन्या में। 186 : आखिरत में क्यूं कि आखिरत की बद बख्ती दुन्या में तुरीके हक से बहक्ने का नतीजा है तो जो कोई कित्ताबे इलाही और रसूले बरहक का इत्तिबाअ करे और उन के हुक्म के मुताबिक चले वोह दुन्या में बहक्ने से और आखिरत में उस के अज़ाब व वबाल से नजात पाएगा। 187 : और मेरी हिदायत से रू गर्दानी की 188 : दुन्या में या क़ब्र में या आखिरत में या दीन में या इन सब में। दुन्या की तंग जिन्दगानी येह है कि हिदायत का इत्तिबाअ न करने से अमले बद और हराम में मुब्तला हो या क़नाअत से महरूम हो कर गिरिफ्तारे हिर्स हो जाए और कस्ते मालो अस्बाब से भी उस को फरागे खातिर (बे फिक्री) और सुकूने कल्ब मुयस्सर न हो, दिल हर चीज़ की तुलब में आवारा हो और हिर्स के गुमों से कि येह नहीं वोह नहीं, हाल तारीक और वक्त खराब रहे और मोमिने मुतवक्कल की तरह उस को सुकून व फराग हासिल ही न हो जिस को ह्याते तथ्यबा कहते हैं فَلَنَحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً (तो ज़रूर हम उसे अच्छी जिन्दगी जिलाएंगे)। और क़ब्र की तंग जिन्दगानी येह है कि हदीस शरीफ में वारिद हुवा कि काफिर पर निनानवे अज़्दहे उस की क़ब्र में मुसल्लत किये जाते हैं। शाने नुज़ूल : हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फरमाया : येह आयत अस्वद बिन अब्दुल उज़्ज़ा मखज़ूमि के हक में नाज़िल हुई। और क़ब्र की जिन्दगानी से मुराद क़ब्र का इस सख्ती से दबाना है जिस से एक तरफ़ की पस्लियां दूसरी तरफ़ आ जाती हैं। और आखिरत में तंग जिन्दगानी जहन्नम के अज़ाब हैं जहां जक्कूम (थूहड) और खौलता पानी और जहन्नमियों के खून और उन के पीप खाने पीने को दी जाएगी। और दीन में तंग जिन्दगानी येह है कि नेकी की राहें तंग हो जाएं और आदमी कस्बे हराम में मुब्तला हो। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फरमाया कि बन्दे को थोड़ा मिले या बहुत अगर खौफ़ खुदा नहीं तो उस में कुछ भलाई नहीं और येह तंग जिन्दगानी है। 189 : त्शेरिकير و خازن و مدارك و غيرہ)। 190 : तू उन पर ईमान न लाया और

الْيَوْمَ تُنْسَى ۱۲۶ ﴿۱۲۶﴾ وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِآيَاتِ رَبِّهِ ط

आज तेरी कोई खबर न लेगा¹⁹¹ और हम ऐसा ही बदला देते हैं जो हृद से बढ़े और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए

وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَى ۱۲۷ ﴿۱۲۷﴾ أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ

और बेशक आखिरत का अज़ाब सब से सख्त तर और सब से देर पा है तो क्या उन्हें इस से राह न मिली कि हम ने उन से पहले कितनी

مِّنَ الْقُرُونِ يَشُورَنَ فِي مَسْكِنِهِمْ ط إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النَّهْيِ ۱۲۸ ﴿۱۲۸﴾

संगतें (कौमों) हलाक कर दीं¹⁹² कि येह उन के बसने की जगह चलते फिरते हैं¹⁹³ बेशक इस में निशानियां हैं अक़ल वालों को¹⁹⁴

وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزِمَامًا وَأَجَلٌ مُّسَيَّ ۱۲۹ ﴿۱۲۹﴾ فَاصْبِرْ

और अगर तुम्हारे रब की एक बात न गुज़र चुकी होती¹⁹⁵ तो ज़रूर अज़ाब उन्हें¹⁹⁶ लिपट जाता और अगर न होता एक वा'दा ठहराया हुवा¹⁹⁷ तो उन की

عَلَى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ

बातों पर सब्र करो और अपने रब को सराहते (ता'रीफ़ करते) हुए उस की पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले¹⁹⁸ और उस के

غُرُوبِهَا وَمِنْ أَنَايِ الْبَيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافِ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَى ۱۳۰ ﴿۱۳۰﴾

डूबने से पहले¹⁹⁹ और रात की घड़ियों में उस की पाकी बोलो²⁰⁰ और दिन के किनारों पर²⁰¹ इस उम्मीद पर कि तुम राजी हो²⁰²

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْتَابِهِمْ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ

और ऐ सुनने वाले अपनी आंखें न फैला उस की तरफ़ जो हम ने काफ़िरों के जोड़ों को बरतने के लिये दी है जीती दुन्या की

الدُّنْيَا لِنَفْسِنَهُمْ فِيهِ ط وَرِزْقِ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۱۳۱ ﴿۱۳۱﴾ وَأَمْرٌ أَهْلَكَ

ताज़गी²⁰³ कि हम उन्हें उस के सबब फ़ितने में डालें²⁰⁴ और तेरे रब का रिज़क²⁰⁵ सब से अच्छा और सब से देर पा है और अपने घर वालों

191 : जहन्म की आग में जला करेगा । 192 : जो रसूलों को नहीं मानती थीं । 193 : या'नी कुरैश अपने सफ़रों में उन के दियार (मकानात व बस्तियों) पर गुज़रते हैं और उन की हलाकत के निशान देखते हैं । 194 : जो इब्रत हासिल करें और समझें कि अम्बिया की तक्ज़ीब और उन की मुख़ालफ़त का अन्जाम बुरा है । 195 : या'नी येह कि उम्मेत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ के अज़ाब में ताख़ीर की जाएगी । 196 : दुन्या ही में 197 : या'नी रोज़े क़ियामत । 198 : इस से नमाज़े फ़ज़्र मुराद है । 199 : इस से ज़ोहर व अ़सर की नमाज़ें मुराद हैं जो दिन के निस्फ़े आख़िर में आपताब के ज्वाल व गुरुब के दरमियान वाक़ेअ हैं । 200 : या'नी मगरिब व इशा की नमाज़ें पढ़ो । 201 : फ़ज़्र व मगरिब की नमाज़ें, इन की ताकीदन तकरार फ़रमाई गई । और बा'ज मुफ़स्सरीन क़बले गुरुब से नमाज़े अ़सर और अतराफ़े नहार से ज़ोहर मुराद लेते हैं, उन की तौज़ीह येह है कि नमाज़े ज़ोहर ज्वाल के बा'द है और इस वक़्त दिन के निस्फ़े अब्वल और निस्फ़े आख़िर के अतराफ़ मिलते हैं । निस्फ़े अब्वल की इन्तिहा है और निस्फ़े आख़िर की इब्तिदा । (मारक ومارون) 202 : **अब्वल** के फ़ज़लो अता और उस के इन्शामो इक़ाम से कि तुम्हें उम्मत के हक़ में शफ़ीअ बना कर तुम्हारी शफ़ाअत क़बूल फ़रमाए और तुम्हें राजी करे जैसा कि उस ने फ़रमाया है : **وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ** (और बेशक करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राजी हो जाओगे) । 203 : या'नी अरनाफ़ व अक्साम कुफ़फ़ार यहूदो नसारा वग़ैरा को जो दुन्यवी साजो सामान दिया है मोमिन को चाहिये कि उस को इस्तिहसान व ए'जाब (तअज़ुब व अच्छाई) की नज़र से न देखे । हसन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَىٰ عَنْهُ** ने फ़रमाया कि ना फ़रमानों के तुम्तुराक़ (शानो शौकत, टाट बाट) न देखो लेकिन येह देखो कि गुनाह और मा'सियत की ज़िल्लत किस तरह उन की गरदनो से नुमुदार है । 204 : इस तरह कि जितनी उन पर ने'मत ज़ियादा हो उतनी ही उन की

بِالصَّلَاةِ وَأَصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا ۖ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ

को नमाज का हुक्म दे और खुद इस पर साबित रह कुछ हम तुझ से रोजी नहीं मांगते²⁰⁶ हम तुझे रोजी देंगे²⁰⁷ और अन्जाम का भला

لِلتَّقْوَى ۝ وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّن رَّبِّهِ ۗ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةٌ مَّا

परहेज गारी के लिये और काफ़िर बोले यह²⁰⁸ अपने रब के पास से कोई निशानी क्यूं नहीं लाते²⁰⁹ और क्या उन्हें इस का बयान न आया जो

فِي الصُّحُفِ الْأُولَى ۝ وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا

अगले सहीफों में है²¹⁰ और अगर हम उन्हें किसी अज़ाब से हलाक कर देते रसूल के आने से पहले तो²¹¹ ज़रूर कहते

رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَتِكَ مِن قَبْلِ أَنْ نُنذَلَ

ऐ हमारे रब तू ने हमारी तरफ कोई रसूल क्यूं न भेजा कि हम तेरी आयतों पर चलते कबल इस के कि ज़लील

وَنُخْرَى ۝ قُلْ كُلُّ مَّتْرِبٍصٍّ فَتَرَبِّصُوا ۚ فَسَتَعْلَمُونَ مَن أَصْحَابُ

व रुस्वा होते तुम फ़रमाओ सब राह देख रहे हैं²¹² तो तुम भी राह देखो तो अब जान जाओगे²¹³ कि कौन हैं

الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَى ۝

सीधी राह वाले और किस ने हिदायत पाई

सरकशी और उन का तुग्यान बढ़े और वोह सजाए आख़िरत के सजावार हों । 205 : या'नी जन्नत और उस की ने'मतें 206 : और इस का मुकल्लफ नहीं करते कि हमारी खल्क को रोजी दे या अपने नफ़स और अपने अहल की रोजी का जिम्मेदार हो बल्कि 207 : और उन्हें भी, तू रोजी के गुम में न पड़, अपने दिल को अग्रे आख़िरत के लिये फ़ारिग़ रख कि जो **अल्लाह** के काम में होता है **अल्लाह** उस की कारसाज़ी करता है । 208 : या'नी सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** 209 : जो इन की सिद्धते नुबुव्वत पर दलालत करे, बा वुजूदे कि आयाते कसीरा आ चुकी थीं और मो'जिजात का मुतवातिर जुहूर हो रहा था फिर कुफ़फ़ार उन सब से अन्धे बने और उन्होंने ने हुजूर की निस्वत येह कह दिया कि आप अपने रब के पास से कोई निशानी क्यूं नहीं लाते ? इस के जवाब में **अल्लाह** तबारक व तआला फ़रमाता है : 210 : या'नी कुरआन और सय्यिदे आलम की बिशारत और आप की नुबुव्वत व बि'सत का ज़िक्र, येह कैसी आ'ज़म आयात हैं ! इन के होते हुए और किसी निशानी की त़लब करने का क्या मौक़अ है ! 211 : रोज़े क़ियामत 212 : हम भी और तुम भी । शाने नुज़ूल : मुशिरकीन ने कहा था कि हम ज़माने के हवादिस और इन्क़िलाब का इन्तिज़ार करते हैं कि कब मुसल्मानों पर आएँ और इन का किस्सा तमाम हो, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और बताया गया कि तुम मुसल्मानों की तबाही व बरबादी का इन्तिज़ार कर रहे हो और मुसल्मान तुम्हारे इक़बत (अन्जाम) व अज़ाब का इन्तिज़ार कर रहे हैं । 213 : जब खुदा का हुक्म आएगा और क़ियामत काइम होगी ।